स्वप्न साकार है पर वेदना है

बड़ी उमंगों से जो निर्मित करवाया

सह धूप।

आज सुसज्जित और अलंकृत खड़ा हुआ शुभ रूप।

नहीं शून्यता पर भर सकते ऐसे अगणित धाम।

गये अनुज अनिवृत्ति हेतु यश शेष बचा बस नाम।

छाया सौख्य सुरक्षा देगा ग्रह अभीष्ट विश्राम।

किन्तु लौट सकता क्या निश्छल प्रेम हास अभिराम।

तुम अशोक थे और रहे आजीवन बन्धु अशोक।

किन्तु गये दे सकल स्वजन को नित गहराता शोक।

खोकर तुम्हें कौन पा सकता पहले सी विश्रांति।

जीवन है यह रूक्ष और कटु सुखाभास बस भ्रांति।

शाश्वत लोकों में अब पाओ तुम आनन्द अशेष।

कौन जीव जगती पर आकर हुआ नहीं यश शेष।

त्याग अशांति लोक की पाओ तुम अमला चिर शान्ति।

पुनः प्राप्त हो प्रकृत तुम्हें वह अनघ शीत शुभ कान्ति।

संभव नहीं विस्मरण गहरे उर में हुए प्रविष्ट।

कभी न सोचा था ऐसा भी विधि से शक्य अनिष्ट।

सारे सम्बन्धों का पटुतर तुम रख पाए ध्यान।

विरले रख सकते तुम जैसा निज अग्रज का मान।

शिव कुमार मिश्र 02.12.2022